मिल गया भगवन,तृप्त हुए नयन
खिल गया मन का चमन
मुक्त हुई भटकन,मिला अब चयन
शांत हुई दिल की धड़कन
आत्म का हुआ प्रभु से मिलन
सुख चैन का हुआ सेवन
काम- क्रोध की मिटी अग्न
पावनता का मिला शगुन
निर्मल हुआ यह तन
पवित्र बन हुआ कंचन
एक से बन्धे सर्व सम्बन्ध
कटे सारे कर्मबंधन
हुए मुक्त बने निर्बन्धन
आत्मा हुई स्वछन्द
ज्ञान योग के मिले उसे पंख
जीवनमुक्ति का हुआ अनुभव
असंभव से हुआ सब संभव
दैव्य गुण हुए धारण
ईश्वरीय पालना का मिला सुअवसर
परमपिता परमशिक्षक परमसतगुरु
बन दिया गीता ज्ञान ,सन्मुख
सिखाया सद्व्यवहार सद आचरण
श्रेष्ठ भाग्य को लग गयी कलम